सूरह — एक कहानी

सूरह लुक़मान

लुक़मान

पूरा सफ़र — एक बाप की नसीहत, हमेशा के लिए महफ़ूज़ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 31 • 34 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

व लक़द आतैना लुक़मानल्-हिक्मत अनिश्-कुर लिल्लाह
12. और हमने लुक़मान को हिकमत दी कि अल्लाह का शुक्र करो।

या बुनय्य ला तुश्रिक बिल्लाह; इन्नश्-शिर्क ल-ज़ुल्मुन 'अज़ीम
13. ऐ मेरे प्यारे बेटे, अल्लाह के साथ किसी को शरीक मत करो; बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

व साहिब्हुमा फ़िद्-दुन्या म'अ्रूफ़ा
15. और दुनिया में उन दोनों का साथ अच्छे तरीक़े से दो।

या बुनय्य इन्नहा इन तकु मिस्क़ाल हब्बतिम्-मिन ख़र्दलिन
16. ऐ मेरे बेटे, अगर वो (अमल) राई के दाने के बराबर भी हो।

व ला तुस'इर ख़द्दक लिन्-नासि व ला तम्शि फ़िल्-अर्ज़ि मरहा
18. और लोगों से अपना गाल मत फेर, और ज़मीन में अकड़ कर मत चल।

व मा तद्री नफ़्सुम्-बि-अय्यि अर्ज़िन तमूत
34. और कोई जान नहीं जानती कि वो किस ज़मीन में मरेगी।

हिकमत, और उसका पहला फल

बेटा, ये सूरह एक ऐसे आदमी के नाम पर है जो न नबी था न बादशाह — एक ऐसा आदमी जिसे रिवायात एक ग़ुलाम, साँवला, काम से फटे पाँव वाला बयान करती हैं। और अल्लाह ने उसकी नसीहत क़ुरआन में रख दी, ताकि ये वक़्त के इख़्तिताम तक पढ़ी जाए।

'**व लक़द आतैना लुक़मानल्-हिक्मत** — और हमने यक़ीनन **लुक़मान** को **हिकमत** दी — **अनिश्-कुर लिल्लाह** — (ये कह कर): **अल्लाह का शुक्र करो।**'

बेटा, देखिए हिकमत के तोहफ़े के फ़ौरन बाद क्या आता है: **शुक्र करने का हुक्म।** गोया कि एक शख़्स के पास अस्ली हिकमत है इसका पहला सबूत ये है कि वो शुक्र कहता है।

'**व मंय्यश्कुर फ़-इन्नमा यश्कुरु लि-नफ़्सिह** — और जो शुक्र करे वो **अपने ही फ़ायदे** के लिए शुक्र करता है — **व मन कफ़र फ़-इन्नल्-लाह ग़निय्युन हमीद** — और जो ना-शुक्री करे — बेशक, अल्लाह बे-नियाज़, लायक़-ए-तारीफ़ है।'

बेटा, शुक्र अल्लाह में कुछ नहीं बढ़ाता, और ना-शुक्री उन्हें कुछ कम नहीं करती। **ये सिर्फ़ आपको बदलता है**: शुक्र-गुज़ार दिल एक मुतमइन दिल होता है, और ना-शुक्रा दिल बे-चैन रहता है चाहे कितना ही पाए।

और अब, बेटा, नसीहत शुरू होती है — एक बाप अपने बेटे से बात करता। इसे यूँ पढ़िए गोया ये आपसे कहा जा रहा है, क्योंकि अल्लाह ने इसे ठीक इसी लिए महफ़ूज़ किया।

ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक मत करो

'**व इज़ क़ाल लुक़मानु लि-बनिही व हुव य'इज़ुहू** — और जब लुक़मान ने अपने बेटे से कहा जब कि वो उसे **नसीहत** कर रहा था — **या बुनय्य ला तुश्रिक बिल्लाह** — **ऐ मेरे प्यारे बेटे, अल्लाह के साथ किसी को शरीक मत करो** — **इन्नश्-शिर्क ल-ज़ुल्मुन 'अज़ीम** — **बेशक, शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।**'

बेटा, मुख़ातिब ग़ौर कीजिए: '**या बुनय्य**' — मेरे छोटे बेटे, मेरे प्यारे बेटे। इस सूरह की हर एक नसीहत नर्मी से शुरू होती है। वो एक बार भी 'तुम्हें करना चाहिए' या 'कितनी बार तुम्हें बताया' नहीं कहता। वो कहता है 'मेरे प्यारे बेटे'।

और ग़ौर कीजिए उसने **पहली** चीज़ क्या सिखाई: **तौहीद।** आदाब नहीं, करियर नहीं, शादी नहीं। एक वालिद की बच्चे पर सब से पहली ज़िम्मेदारी यही है: तुम्हारा रब कौन है।

और देखिए वो शिर्क को कैसे बयान करता है — '**ज़ुल्म**' के तौर पर। क्यों? बेटा, क्योंकि अरबी में ज़ुल्म का मतलब **किसी चीज़ को ग़लत जगह रखना** है। इबादत — जो ख़ालिक़ का हक़ है — किसी मख़्लूक़ चीज़ की तरफ़ मोड़ना एक चीज़ को बिल्कुल ग़लत जगह रखना है। ये हक़ के ख़िलाफ़ एक ज़ुल्म है, और ख़ुद आपकी अपनी जान के ख़िलाफ़।

और इस लफ़्ज़ के बारे में एक ख़ूबसूरत वाक़िआ है। जब आयत 'जो ईमान लाए और अपने ईमान को ज़ुल्म से न मिलाया' नाज़िल हुई, सहाबा परेशान हुए और बोले: हम में से कौन है जिसने अपनी जान पर ज़ुल्म न किया हो? और नबी ﷺ ने फ़रमाया: ये वैसा नहीं जैसा तुम समझते हो। क्या तुमने नेक बंदे के अल्फ़ाज़ नहीं सुने — 'इन्नश्-शिर्क ल-ज़ुल्मुन 'अज़ीम'? वहाँ ज़ुल्म का मतलब **शिर्क** था।

बेटा, यूँ सुन्नत क़ुरआन की तशरीह करती है — **ख़ुद क़ुरआन से।**

माँ की कमज़ोरी पर कमज़ोरी

और अब, बेटा, अल्लाह लुक़मान की नसीहत को अपनी नसीहत से रोकते हैं — और ये जगह जान-बूझ कर चुनी गई:

'**व वस्सैनल्-इंसान बि-वालिदैह** — और हमने इंसान को उसके **वालिदैन** (की ख़िदमत) की **ताकीद** की — **हमलत्हु उम्मुहू वह्नन 'अला वह्न** — **उसकी माँ ने उसे कमज़ोरी पर कमज़ोरी** में **उठाया** — **व फ़िसालुहू फ़ी 'आमैन** — और उसका **दूध छुड़ाना दो साल** में है — **अनिश्-कुर ली व लि-वालिदैक** — **मेरा शुक्र करो और अपने वालिदैन का** — **इलय्यल्-मसीर** — मेरी ही तरफ़ लौटना है।'

बेटा, 'वह्नन 'अला वह्न' — कमज़ोरी पर कमज़ोरी, नातवानी पर बढ़ती नातवानी। महीने दर महीने वो कमज़ोर होती गई जैसे वो मज़बूत होता गया, अपनी ताक़त उसके जिस्म से खींचता।

और फिर हैरत-अंगेज़ जोड़ा देखिए: '**मेरा शुक्र करो और अपने वालिदैन का**' — अल्लाह का शुक्र और वालिदैन का शुक्र एक साँस में ज़िक्र हुए।

मगर फिर, बेटा, हद आती है — और ये एक ऐसे कामिल तवाज़ुन के साथ बयान हुई जो सिर्फ़ वही हासिल कर सकती थी:

'**व इन जाहदाक 'अला अन तुश्रिक बी मा लैस लक बिही 'इल्मुन फ़-ला तुति'हुमा** — और अगर वो **तुझपर ज़ोर डालें** कि मेरे साथ उस चीज़ को शरीक करे जिसका तुझे इल्म नहीं, तो **उनकी बात मत मान** — **व साहिब्हुमा फ़िद्-दुन्या म'अ्रूफ़ा** — **मगर दुनिया में उन दोनों का साथ अच्छे तरीक़े से दो।**'

बेटा, इसे दो बार पढ़िए। **अल्लाह की ना-फ़रमानी में उनकी बात मत मानो — और फिर भी उनके साथ ख़ूबसूरती से पेश आते रहो। हुक्म रद्द करो; नर्मी कभी वापस मत लो।**

ये एक ऐसा तवाज़ुन है जिसे ज़्यादा तर लोग थाम नहीं सकते। हम समझते हैं कि किसी से इख़्तिलाफ़ हमें उस के साथ सर्द होने की इजाज़त देता है। इस्लाम दोनों को बिल्कुल अलग करता है: **इताअत की एक हद है, मगर अच्छे बर्ताव की नहीं।**

'**वत्तबि' सबील मन अनाब इलय्य** — और उन का रास्ता अपनाओ जो **मेरी** तरफ़ **लौटते** हैं।' बेटा, ग़ौर कीजिए: जब वालिदैन की रहनुमाई नाकाम हो, तुम्हें दूसरी रहनुमाई ढूँढने को कहा जाता है — उन लोगों की सुहबत जो अल्लाह की तरफ़ मुड़ते हैं। **कभी नेक सुहबत के बग़ैर मत रहो।**

एक राई के दाने का वज़न

और अब लुक़मान फिर शुरू करता है, बेटा — और अगली चीज़ जो वो अपने बेटे में बोता है वो ये शुऊर है कि **कोई चीज़ पोशीदा नहीं**:

'**या बुनय्य इन्नहा इन तकु मिस्क़ाल हब्बतिम्-मिन ख़र्दलिन — ऐ मेरे प्यारे बेटे, बेशक, अगर वो (अमल) राई के दाने के वज़न के बराबर भी हो — फ़-तकुन फ़ी सख़रतिन औ फ़िस्-समावाति औ फ़िल्-अर्ज़िं — और वो किसी चट्टान में हो, या आसमानों में, या ज़मीन में — यअ्ति बिहल्-लाह — अल्लाह उसे ले आएगा — इन्नल्-लाह लतीफ़ुन ख़बीर** — बेशक, अल्लाह **बारीक-बीन**, बा-ख़बर है।'

बेटा, वो तीन छुपने की जगहें देखिए जो वो नाम लेता है। एक चट्टान के अंदर — सब से ठोस, बंद जगह जो आप तसव्वुर कर सकें। आसमानों में — सब से ऊँचा और दूर। ज़मीन में — सब से गहरा और दफ़्न हुआ। और जो चीज़ छुपी है वो एक **राई का दाना** है, सब से छोटी चीज़ों में से एक जो कोई शख़्स थामे।

सब से छोटी चीज़, सब से ना-मुमकिन छुपने की जगह — और अल्लाह उसे निकाल लाते हैं।

और बेटा, इस्तेमाल हुआ नाम ग़ौर कीजिए: '**अल-लतीफ़**'। इसका मतलब वो ज़ात

जिसका इल्म सब से बारीक, सब से नाज़ुक तफ़्सीलात तक पहुँचता है — इतना बारीक कि कुछ नहीं बचता — और ये उस नर्मी और मेहरबानी का भी मफ़्हूम रखता है जिस से वो चीज़ें तरतीब देते हैं।

तो वही नाम जो तुम्हें बताता है कि तुम्हारा कोई काम छुपा नहीं ये भी बताता है कि वो तुम्हारे साथ नर्म हैं। बेटा, **यही वो तवाज़ुन है जिसके साथ एक बच्चे को बड़ा होना चाहिए: वो हर चीज़ देखते हैं, और वो मेहरबान हैं।**

एक ज़िंदगी के लिए चार चीज़ें

और अब, बेटा, लुक़मान अपने बेटे को जीने का एक मुकम्मल प्रोग्राम देता है — दो आयतों में चार हिदायात:

'**या बुनय्य अक़िमिस्-सलाह** — ऐ मेरे प्यारे बेटे, **नमाज़ क़ायम** करो।' पहले, तुम्हारा ऊपर का रिश्ता। ज़िंदगी की हर दूसरी चीज़ इसी पर टिकती है।

'**वअ्मुर बिल्-म'अ्रूफ़ि वन्ह 'अनिल्-मुन्कर** — और **अच्छाई** का **हुक्म** दो और **बुराई** से **रोको**।' दूसरा, तुम्हारी बाहर की ज़िम्मेदारी। बेटा, एक मोमिन सिर्फ़ ख़ुद को नहीं बचाता — उसे परवाह होती है कि उसके इर्द-गिर्द क्या होता है।

'**वस्बिर 'अला मा असाबक — और जो तुमपर पड़े उस पर सब्र करो।**' तीसरा — और ग़ौर कीजिए ये ठीक दूसरे के फ़ौरन बाद क्यों आता है। क्योंकि जिस लम्हे तुम लोगों को भलाई की तरफ़ और नुक़सान से दूर बुलाना शुरू करते हो, तुम से रंजिश की जाएगी, मज़ाक़ उड़ाया जाएगा, और मुख़ालफ़त होगी। **लुक़मान इसे अपने बेटे से छुपाता नहीं: वो उसे बताता है कि मुसीबत की तवक़्क़ो रखे और उसे सहे।**

'**इन्न ज़ालिक मिन 'अज़्मिल्-उमूर** — बेशक, ये **हिम्मत** के कामों में से है।'

और फिर, बेटा, दो हिदायात आती हैं कि **ख़ुद को** कैसे पेश किया जाए — और ये क़ुरआन की सब से अमली आयतों में से हैं:

'**व ला तुस'इर ख़द्दक लिन्-नासि** — और लोगों से अपना **गाल** हक़ारत से **मत फेर।**'

बेटा, क्या ठीक तस्वीर। 'तुस'इर ख़द्दक' — अपना चेहरा एक तरफ़ मोड़ना, किसी को

अपनी आँखों के बजाए अपना गाल देना। ये उस शख़्स का इशारा है जो ख़ुद को उस से ऊपर समझता है जो उस से बात कर रहा है। हम में से हर एक ने वो चेहरा झेला है — एक क्लर्क से, एक अफ़्सर से, एक रिश्तेदार से जिसने तरक़्क़ी कर ली। **और अल्लाह ने इसके ख़िलाफ़ क़ानून बनाया।**

'**व ला तम्शि फ़िल्-अर्ज़ि मरहा** — और ज़मीन में **अकड़** कर, ग़ुरूर से **मत चल** — **इन्नल्-लाह ला युहिब्बु कुल्ल मुख़्तालिन फ़ख़ूर** — बेशक, अल्लाह हर **ख़ुद-फ़रेब** और **शेख़ी-बाज़** को पसंद नहीं करता।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: तुम्हारी **चाल** का क़ानून बनाया जा रहा है। क्योंकि एक शख़्स का ग़ुरूर उसकी चाल में उसके अल्फ़ाज़ से पहले ज़ाहिर होता है।

'**वक़्सिद फ़ी मश्यिक** — और अपनी **चाल** में **मियाना-रव** रहो — **वग़्ज़ुज़ मिन सौतिक** — और अपनी **आवाज़ धीमी** करो — **इन्न अन्करल्-अस्वाति ल-सौतुल्-हमीर** — बेशक, सब से ना-गवार आवाज़ **गधों** की **आवाज़** है।'

बेटा, वो मुक़ाबला जान-बूझ कर शर्मिंदा करने वाला है, और ये एक नौजवान के ज़ेहन में रहने के लिए है। एक गधा बिना किसी वजह के अपनी आवाज़ ऊँची करता है — ख़ालिस शोर, कोई मज़मून नहीं। अल्लाह कह रहे हैं: **जब तुम गुफ़्तगू पर ग़लबा पाने को चीख़ते हो, तुम उस आवाज़ से मिलते हो।**

और बेटा, देखिए लुक़मान ने अपने बेटे को पूरा पैकेज क्या दिया है: अल्लाह के साथ तुम्हारा रिश्ता (तौहीद और नमाज़), मुआशरे के साथ (भलाई का हुक्म, सब्र), तुम्हारे वालिदैन के साथ (इख़्तिलाफ़ में भी नर्मी), और तुम्हारे अपने जिस्म के साथ (तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी चाल, तुम्हारी आवाज़)।

ये एक मुकम्मल परवरिश है — और इसकी एक लाइन भी दौलत या हैसियत के बारे में नहीं।

अगर तमाम दरख़्त क़लम होते

फिर सूरह अल्लाह की अज़मत की तरफ़ मुड़ती है, और क़ुरआन की सब से साँस-रोक देने वाली तस्वीरों में से एक देती है:

'**व लौ अन्नमा फ़िल्-अर्ज़ि मिन शजरतिन अक़्लामुंव्** — और **अगर ज़मीन के तमाम दरख़्त क़लम होते** — **वल्-बहु यमुद्दुहू मिम्-ब'अ्दिही सब्अतु अब्हुर** — **और समंदर (सियाही), उसके बाद सात और समंदर** उसे बढ़ाते — **मा नफ़िदत कलिमातुल्-लाह** — **अल्लाह के अल्फ़ाज़ ख़त्म न होते** — **इन्नल्-लाह 'अज़ीज़ुन हकीम** — बेशक, अल्लाह ग़ालिब, हिकमत वाला है।'

बेटा, इसका तसव्वुर करने की कोशिश कीजिए। सय्यारे का हर दरख़्त — हर जंगल, हर बाग़ — क़लम बना कर छीला गया। हर समंदर सियाही बन गया, और फिर सात और समंदर उनके बाद उंडेल दिए गए। और आप लिखते, और लिखते, और क़लम घिस जाते और सियाही सूख जाती — और उसके अल्फ़ाज़ ख़त्म न होते।

क्योंकि उसके इल्म और उसकी बात की कोई इंतिहा नहीं, बेटा। **उस में से जो आपको दिया गया — ये क़ुरआन — वो है जो एक इंसान उठा सके, न कि जो मौजूद है।**

'**मा ख़ल्क़ुकुम व ला ब'अ्सुकुम इल्ला क-नफ़्सिंव्-वाहिदह** — **तुम्हारा बनाना और तुम्हारा दोबारा उठाना एक ही जान** (के बनाने) **जैसा** है।' बेटा, पूरी इंसानियत को उठाना उन के लिए एक शख़्स बनाने से ज़्यादा मुश्किल नहीं। एक ऐसी ताक़त के लिए जो मिक़्दार से तक़्सीम नहीं होती, आँकड़े कुछ मायने नहीं रखते।

और फिर सूरह अल्लाह की रहमत को एक समंदर की तस्वीर में दिखाती है: '**व इज़ा ग़शियहुम मौजुन कज़्-ज़ुललि द'अवुल्-लाह मुख़्लिसीन लहुद्-दीन** — और जब **मौजें** उन्हें **सायबानों** की तरह **ढाँप** लेती हैं, वो अल्लाह को पुकारते हैं, दीन को उसी के लिए **ख़ालिस** करते हुए — **फ़-लम्मा नज्जाहुम इलल्-बर्रि फ़-मिन्हुम मुक़्तसिद** — मगर जब वो उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है, उन में से कुछ (ईमान में) मियाना-रव होते हैं।'

बेटा, **तूफ़ान हर एक को मुख़्लिस बना देता है। मोमिन का इम्तेहान ये है कि वो ख़ुश्की पर क्या होता है।**

पाँच चीज़ें जिन्हें कोई नहीं जानता

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक ऐसी आयत से जो ग़ैब के पाँच मामलात गिनाती है जो सिर्फ़ अल्लाह के हैं:

'**इन्नल्-लाह 'इन्दहू 'इल्मुस्-सा'अह** — बेशक, **अल्लाह** — उसी के पास **क़ियामत** का इल्म है — **व युनज़्ज़िलुल्-ग़ैस** — और वो **बारिश** उतारता है — **व यअ्लमु मा फ़िल्-अरहाम** — और जानता है जो **पेटों** में है — **व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़दा** — **और कोई जान नहीं जानती कि वो कल क्या कमाएगी** — **व मा तद्री नफ़्सुम्-बि-अय्यि अर्ज़िन तमूत** — **और कोई जान नहीं जानती कि वो किस ज़मीन में मरेगी** — **इन्नल्-लाह 'अलीमुन ख़बीर** — बेशक, अल्लाह जानने वाला, बा-ख़बर है।'

बेटा, नबी ﷺ ने इन्हें ग़ैब की कुंजियाँ कहा जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता।

और यहाँ बारीक फ़हम ग़ौर कीजिए: एक डॉक्टर एक स्कैन देख सकता है और एक मौसम-दान बारिश की पेशगोई कर सकता है — ये उस चीज़ का मुशाहिदा है जो पहले से मौजूद है, या उस का अंदाज़ा जो मुमकिन है। आयत इन मामलात के **मुकम्मल** और **यक़ीनी** इल्म के बारे में है, जो सिर्फ़ अल्लाह का है। वो बच्चे की रूह, उम्र, किरदार और मुक़द्दर जानते हैं; वो उस बारिश का हर क़तरा और हर एक कहाँ गिरेगा जानते हैं।

मगर बेटा, आख़िरी दो देखिए। वो कायनात के बारे में हैं ही नहीं — **वो आपके बारे में हैं**:

'कोई जान नहीं जानती कि वो **कल क्या कमाएगी**।' सिर्फ़ तुम्हारी आमदनी नहीं — तुम्हारे **अमल**। तुम नहीं जानते कि कल तुम एक नूर-भरे दिल से नमाज़ पढ़ोगे या किसी ऐसी चीज़ में पड़ जाओगे जिसकी तुमने कभी तवक़्क़ो न की। **इसी लिए एक मोमिन अपनी ख़ुद की हालत पर कभी बे-फ़िक्र नहीं होता, और किसी दूसरे से कभी मायूस नहीं होता।**

'और कोई जान नहीं जानती कि वो **किस ज़मीन** में मरेगी।' बेटा, तुम्हें यक़ीन हो सकता है कि तुम उसी शहर में मरोगे जिसमें पैदा हुए। तुम ये नहीं जानते। एक शख़्स

एक छोटे सफ़र पर निकलता है और वापस नहीं आता। दूसरा दुनिया घूमता है और अपने ही बिस्तर पर मरता है।

और यही वजह है कि सूरह यहाँ ख़त्म होती है, बेटा — लुक़मान की जीने के तरीक़े की सारी नसीहत के बाद। क्योंकि **उस नसीहत का पूरा नुक़्ता ये है कि तुम नहीं जानते कि उसे अमल में लाने के लिए कितना वक़्त है।**

तो वहीं से शुरू करो जहाँ से लुक़मान ने शुरू किया: अपने रब को जानो, अपने वालिदैन की इज़्ज़त करो, नमाज़ पढ़ो, उस की परवाह करो जो तुम्हारे इर्द-गिर्द होता है, सब्र करो, और ख़ुद को नर्मी से पेश करो — **आज से शुरू करो, क्योंकि कल उस में शामिल नहीं जो तुम्हें दिया गया है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. हिकमत का पहला सबूत शुक्र है — और शुक्र सिर्फ़ तुम्हें बदलता है, अल्लाह को कभी नहीं।

2. अपने बच्चों को पहले तौहीद सिखाओ, और उसे नर्मी से सिखाओ: हर हिदायत से पहले 'या बुनय्य'।

3. शिर्क 'ज़ुल्म' है क्योंकि ये किसी चीज़ को बिल्कुल ग़लत जगह रखता है।

4. वालिदैन की इताअत की एक हद है, मगर उनके साथ नर्मी की नहीं — हुक्म रद्द करो, अच्छा बर्ताव कभी वापस मत लो।

5. चट्टान के अंदर एक राई का दाना निकाल लिया जाएगा — और वही नाम जो ये कहता है, अल-लतीफ़, ये भी मतलब रखता है कि वो तुम्हारे साथ नर्म हैं।

6. भलाई की तरफ़ बुलाते वक़्त मुख़ालफ़त की तवक़्क़ो रखो — इसी लिए 'सब्र करो' इसके ठीक बाद आता है।

7. तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी चाल और तुम्हारी आवाज़ तुम्हारे दीन का हिस्सा हैं — और कोई नहीं जानता कि वो कल क्या कमाएगा या कहाँ मरेगा।

या अल्लाह, हमें शुक्र की हिकमत, अपने अंदाज़ में नर्मी अता कीजिए, और जो आज

करना चाहिए उसे हमें टालने न दीजिए। आमीन।